Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9| September 2025

Original Article

महात्मा गाँधी और सर्वोदय समाज के आदर्श की भूमिका

डॉ. देवचन्द्र साह
समाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ला.न.मि.वि.दरभंगा
Email: devchandrasah501@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170934
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9
Pp. 190-192
September 2025
Submitted: 21 Aug. 2025
Revised: 1 Sept. 2025
Accepted: 20 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

शोध सारांश

सर्वोदय का अर्थ सभी लोगो का कल्याण है चाहे वह किसी भी जाति धर्म का क्यो न हो वह धनी या निर्धन। सर्वोदय शब्द का जन्म प्राचीनकाल में हुआ था। सर्वोदय की विचार धारा को सही दंग से समझते के लिए अन्य विचार धाराओ संघवाद, साम्यवाद, उपयोगिकतावाद में अंतर मालूम कर लेना चाहिए। इसी प्रकार लगभग 2,000 वर्ष पूर्व जैनाचार्य संतमभद्र करते है सर्वापदामंतकर निरंत सर्वोदय तीर्थ मिदं तदैव अर्थात सर्वोदय अन्तहिंत और सब आपत्रियो का विराशक है, यह तेरा तीर्थ निस्तारक ही है। गीता के सर्वभूते हिते रताः का तात्पर्य भी सर्वोदय ही है, आज से नहीं वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति में सर्वोदय शब्द जुड़ा हुआ है। लेकिन विधिवत् रूप से इसे एक आधुनिक विचार धारा से इसे एक आधुनिक विचार धारा के रूप प्रदान करने का कार्य बीसवीं सदी के प्रमुख मनीषी महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया जिन्होने लोगो के मन में सर्वोदय की भावना को जागृत किया। सर्वोदय पूंजीवाद से मुक्त है।

मुख्यशब्द: *लोकसंग्रह, समाज सुधार, महात्मा गाँधी, सत्य और अहिंसा, समतामूलक समाज, फुले एवं आंबेडकर विचारधारा नैतिक मूल्य, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक न्याय*

व्याख्या :–

गाँधी जी आदर्शवादी तथा धार्मिक प्रवृति के थे उन्होने तत्कालीन परिस्थितियाँ की विवशता के कारण मानव मात्र की सेवा के लक्ष्य को सामने रखकर सार्वजनिक जीवन में पर्दापण किया। महात्मा गाँधी ने जिस समय सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया उस समय सामाजिक विचार धारा में सत्य एवं अहिसा केवल व्यक्ति विशेष के लिए ही सार्वजनिक रूप से सार्थक नहीं थे। लेकिन महात्मा गाँधी इस धारण के नितान्त विरूद्ध थे। इस संबंध में उनका विचार था कि व्यक्ति की दो अन्तरात्माएँ नहीं हो सकती। एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक और दुसरी राजनीतिक मानवीय कार्यो के सभी क्षेत्रो में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए। इन्होने सत्य वे अहिंसा को सवोपरि माना। हमे सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्तिगत व्यवहार ही नहीं वरन् संघो सुदायो और राष्ट्रो के व्यवहार सिद्वान्त बनाता है।[1]

गाँधी जी के अनुसार नैतिक समस्या ही मनुष्य जाति को सम्पूर्ण है। ऐसी स्थिति में मनुष्य यदि सभी अर्थो में मनुष्य बन जाए और अपने सारे सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक कार्यो की अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार करे, तो समाज अथवा विश्व में दुख संकट तथा समस्या जैसी कोई चीज रह ही नहीं सकती है। एक स्वस्थ राजनीतिक समाज तथा विवेकशील व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे एक नैतिक बल अथवा प्रेरणा होनी चाहिए क्योकि जिस समय व्यक्ति कोई कार्य स्वार्थ के दृष्टि कोण से करता है तो उसमें उस समय पशु प्रवृति का विकास होने लगता है। इसी नैतिक दृष्टि कोण के आधार पर गाँधी जी ने सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन में सत्य और अहिंसा के सिद्वांत का प्रतिपादन किया और इनका सार्थक रूप से प्रयोग किया।[2]

गाँधी के विचारो का अनुसरण केवल नैतिक चरित्र वाले लोग ही कर सकते है। चरित्र से ही व्यक्ति का आकलन किया जाता है। यह कहा जाने लगा कि गाँधी वादी विचार धारा एक ऐसी आदर्श किा प्रतिपादन करती है। जिसे व्यावहारिकता में लाना असंभव है। ऐसी स्थिति में भारतवासियो के द्वारा एक और तो गाँधी जी का गुणगान किया गया लेकिन दुसरी और महात्मा गाँधी तथा उनके विचारो को केवल पूज्यनीय स्थान दिया गया।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.देवचन्द साह, सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास), ला. न. मि. वि. दरभंगा

How to cite this article:
साह, . देवचन्द्र. (2025). महात्मा गाँधी और सर्वोदय समाज के आदर्श की भूमिका. Journal of Research and Development, 17(9), 190–192. https://doi.org/10.5281/zenodo.17471808

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17471808
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9| September 2025

उनके अनुसरण को असंभव की संज्ञा दी गई। ऊँचे से ऊँचे स्वर में महात्मा गाँधी की जय बोलने वाले भारतीय वासी व्यवहार में महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन को बिल्कुल ही भूल गए। इस विचार धारा को बहुत से लोगो ने अपने जीवन में अपनाया है जैसे विनोबा भावे। गाँधी जी के मृत्यु के बाद सन्त विनोबा जैसे कुछ व्यक्तियो ने सवोदयी विचार धारा का प्रसार किया तथा इसे मानव के अपनाने हेतु प्रत्येक संभव प्रयास किया। सर्वोदय विचार धारा का प्रादृर्भाव भारत में ही हुआ या विभिन्न लोगो ने इस विचार धारा को अपनाया सर्वोदयी विचारको में विनोबा भावे जय प्रकाश नारायण, काका कालेलकर शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी सिद्धराज और ठाकुर दास बंग आदि ने नाम प्रमुख है।[3]

सर्वोदय का उन्नति :– सर्वोदय का अर्थ समाज भी धर्म या जाति के हो। गाँधी जी रस्किन पुस्तक से बहुत प्रभावित हुए। गाँधी जी के शब्दो में यह पुस्तक मेरे जीवनका मोड़ बिन्दु लक्षित करती है। गाँधी जी ने रस्किन की पुस्तक का गुजराती भाषा अनुवाद किया जिसका शीर्षक सर्वोदय था।[4] इस पुस्तक में निम्न तीन विचारो पर बल दिया गया था

1. सबके हित में ही व्यक्ति का हित निहित है
2. एक नाई का कार्य भी वकील के कार्य के समा नही महत्वपूर्ण है, क्योकि सभी व्यक्तियो को अपने कार्य से स्वयं की आजीविका प्राप्त करने का अधिकार होता है।
3. श्रमिक का जीवन ही एकमात्र जीन योग्य जीवन है।

सर्वोदय का लक्ष्य धनी वर्ग में आध्यात्मिक कल्याण की भावना को जागृत करना है। आध्यात्मिक कल्याण अर्थात धनी वर्ग में अपरिग्रह और त्याग की भावना उत्पन्न कर उन्हे आत्मिक कल्याण को आरे आगे बढ़ाना नागरिको को सुख प्रदान करने की दृष्टि से सर्वोदय उपयोगिकता से भी आगे जाता है। जहां उपयागिकतावाद अधिकतम व्यक्यिो को अधिकतम सुख प्रदान करना चाहती हैं लेकिन सर्वोदय इसके विपरीत है। यह सभी के सुख की तरफ समर्थन करता है। विनोबा भावे जी लिखते है कि अच्छी राज व्यवस्था उसे ही कहा जा कसता है। जहां समस्त जनता सुखी हो सर्वोदय उपयोगिकतावाद से एक और दृष्टि से भी आगे हैं उपयोगिकताबाद का लक्ष्य व्यक्तियो का भौतिक कल्याण है। लेकिन सर्वोदय का लक्ष्य व्यक्तियो का भौतिक मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का कल्याण है। यह व्यक्ति के धतुर्मुखी विकास पर बल देता है।[5]

विनोबा भावे के शब्दो में सर्वोदय कुछ का या बहुत का या अधिकतम का उत्थान नहीं चाहता है। हम अधिकतम के अधिकतम सुख से सन्तुष्ट नहीं है। हम तो केवल एक की ओर सबको ऊँचे और नीचे की सबल और निर्बल की बुद्धिमानी तथा बुद्धिहीन की भलाई से ही सन्तुष्ट हो सकते है। सर्वोदय शब्द इस उत्कृष्ट और सर्वव्यापक भाना को अभिव्यक्त करता है। वे आगे लिखते है कि जो दुसरे के दुःखो के समझता है तथा उसकी भलाई चाहता है। जिसमें केवल स्वयं का सुख ने हो। सर्वोदय के आशय है कि स्वयं परिश्रम करके भोजन करना चाहिए। हमें दुसरो की कमाई नहीं खानी चाहिए, अपना भार दुसरे पर नहीं डालना चाहिए यहां पर कमाई का अर्थ है, प्रत्यक्ष उत्पादन से लगाया गया है। 25 दिसम्बर, 1975 को पवचार आश्रम में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन में विनोबा भावे ने पुनः सर्वोदय का आशय बताते हुए कहा कि सर्वोदय सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ ओर कुशल विकेन्दीकरण सर्वोदय समस्त शक्ति जनता को प्राप्त होना सर्वोदय अधिकारी वर्ग द्वारा अपने आपको जनता का स्वामी नहीं वरन् सेवक समझना।[6]

विनोबा भावे के अनुसार व्यक्ति को सार्वजनिक क्षेत्र में सहनशील होना चाहिए। कितने भी गहरे मतभे पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। हम किसी व्यक्ति द्वारा कही गयी बाते से असहमत हो सकते है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति किस बात को उचित समझता है उसे वह करने का अधिकार है। इसी प्रकार हम अन्याय से लड़ेगे लेकिन अन्यायी के प्रति हमारे मन से कोई दुर्भावना नहीं होनी चाहिए। विरोधी को भी प्रेम व सद्भाव के साथ देखेगे यह एक साहसपूर्ण कार्य है। शंकराव देव ने सर्वोदय के आदर्श का उल्लेख इस प्रकार किया है, अहिंसा और सत्य के आधार पर स्थापित वर्ग विहीन और जाति विहीन तथा जिसमें किसी का कोई भी शोषण नहीं कर सकता और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा समूह को अपना सवीगीण विकास करने के लिए समुचित साधन और पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो। इस प्रकार के समाज को स्थापना पर सवोदयी समाज बल देता है।[7]

सर्वादय समाज के आदर्ष :–

एक राज्य विहीन समाज गाँधी जी एक राज्य विहीन समाज के पक्षधर तथा राज्य संस्था के कतु आलोचक थे गाँधी जी के अनुसार राज्य का सबसे बड़ा दोष यह था कि वह अहिंसा पर आधारित है, इसलिए वे राज्य विहीन समाज को ही सवोत्तम मानते थे। गाँधी वादी दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करते हुए सर्वोदय के मुख्य प्रतिपादक आचार्य विनोबा भावे का लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था। जिसमें व्यक्ति को स्वतंत्र रहकर जीने का मौका मिले, इसके साथ शोषण न किया जाए। एक न्यायोचित व्यवस्था में शासक और शासिक दोनो के मध्य कोई भेद नहीं होगा। जय प्रकाश नारायण और सर्वोदय के कुछ अन्य प्रतिपादको ने जनकल्याण कारी राज्य की वर्तमान दृष्टिकोण की भी निदा की गयी थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि इससे शासन की शक्तियो और कार्यो में वृद्धि हो जाती है। व्यवहार में विश्व के विभिन्न राज्यो में शासन किी शक्तियाँ जिस प्रकार से निरन्तर बढ़ती जा रही है, उससे यह आलोचना उचित जान पड़ती है। सर्वोदय का अन्तिम आदर्श एक ऐसे राज्य विहीन समाज को स्थापना है, जो प्रत्येक प्रकार की सत्ता से पूर्णतथा मुक्त होगा। सर्वोदय धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना पर अल देता हैं आज ऐसा समाज होना चाहिए जिसके अन्तर्गत भेदभाव नाम की कोई वस्तु न हो दादा धर्मधिकारी के अनुसार दण्ड निरपेक्ष राज्य का अर्थ है कि दण्ड नहीं रहेगा। दण्डक्षित समाज नहीं रहेगा सत्ता का यका सुव्यवस्था का अधिष्ठान दण्ड नहीं होगा लेकिन लोक सम्पति होगी। क्योकि इस अन्तिम आदर्श को स्थापना में समय लगेगा। इसलिए अन्तरिम काल में किसी न किसी रूप में शासन सत्ता कायम रहेगी।[8]

सर्वोदयी अवधारण का कार्म क्षेत्र भारत ही नहीं बल्कि विश्वव्यापी कल्याण के लिए विकसित की गयी एक अवधारण है तथा अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विश्व बन्धुत्व इसका मूलाधार है। सर्वोदय तो वस्तुतः वसुवैध कुटुम्कम् के उदान मे आस्था

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9| September 2025

रखता हैं सर्वोदय की अन्तर्राष्ट्रीय अवधारणा को स्पष्ट करते हुए थी जय प्रकाश नारायण ने लिखा है कि सर्वोदयी विश्व समाज में वर्तमान राष्ट्रो को क्रम से बने हुए राज्यो के लिए कोई स्थान नहीं होगा सर्वोदय दृष्टि विश्व दृष्टि है और गाँधी के समुदीय वर्तुल में खड़ा हुआ व्यक्ति विश्व नागरिक है।[9] इसी प्रकार विनोबा भावे ने भी लिखा है कि दुनिया में वेग से विचार आगे बढ़ रहे है। धीरे–धीरे सभी देशो की सरहदे टूटने वाली ह ैअब लोगो में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित हो रही है। इसके अलावा सर्वोदयी समाज वर्णा श्रम व्यवस्था को भेदकमूलक स्वीकार करते हुए उसका विरोध करता है। प्रमुख रूप से दादा धर्माधिकारी तथा काका कालेलकर ने वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने के पक्ष में थे तथा इस विषय में उनका महात्मा गाँधी की विचार धारा से भी कुछ मतभेद है। काका कालेलकर ने वर्ण–व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था हेतु प्रमुख माना हैं सामाजिक जीवन मे वह प्रतिस्पर्दा के स्थान पर परिस्पर्द्वा श्रेष्ठता की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ते की प्रवृति को अपनाने पर बल देता है। ग्रामों को जीवन की प्राथमिक और स्वावलम्बी इकाई का रूप प्रदान करना, कुटीर उद्योग धन्धो का विकास जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा और स्त्री–पुरूष की समानता आदि इसके मुख्य विषय है।[10] वस्तुतः सर्वोदय एक ऐसी मानवतावादी विचार धारा है, जो मानव मात्र की सदगुण सम्पन्नता में विश्वास करती है। समाज में मानवीय मूल्य की स्थापना करना इसका प्रमुख लक्ष्य उद्येश्य है। मानव जीवन की समस्याओ का समाधान करने हेतु विचार धारा में बदलाव लाना मूल आधार माना है।

निष्कर्ष :–

सर्वोदय का अर्थ सभी लोगो का कल्याण है चाहे वह किसी भी जाति धर्म का क्यों न हो वह धनी हो या निर्धन 'स्वोदय' शब्द का जन्म प्राचीनकाल मे हआ था। आज से नहीं वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति में सर्वोदय शब्द जुड़ा हुआ है। महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया जिन्होने लोगो के मन से सर्वोदय की भावना को जागृत किया। सर्वोदय पूंजीवाद से मुक्त है। महात्मा गाँधी ने जिस समय सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया उस समय सामाजिक विचारधारा में सत्य एवं अहिंसा केवल व्यक्ति विशेष के लिए ही सार्वजनिक रूप से सार्थक नहीं थे। लेकिन एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक और दुसरी राजनीतिक मानवीय कार्यो के सभी क्षेत्रो में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए। इन्होने सत्य और अहिंसा को सवोपरि मानाफ गाँधी जी के अनुसार नैतिक समस्या ही मनुष्य जाति की सम्पूर्ण समस्या है। गाँधी क विचारो का अनुसरण केवल नैतिक चरित्र वाले ही कर सकते है। चरित्र से ही व्यक्ति का आकलन किया जाता है। गाँधी जी के मृत्यु के बाद सन्त विनोबा भावे जैसे कुछ व्यक्तियो ने सर्वोदयी विचार धारा का प्रसार किया तथा इसे मानव के अपनाने हेतु प्रत्येक संभव प्रयास कियां सर्वोदय विचार धारा का प्राद्रर्भाव भारत में ही हुआ था। विभिन्न लोगो ने इस विचार भावे जयप्रकाश नारायण काका कालेलकर शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी सिद्धराज और ठाकुरदास बंग आदि के नाम प्रमुख है। 25 दिसम्बर 1975 को पवनार आश्रम में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन मे विनोबा भावे ने पुनः सर्वोदय का आशय बताते हुए कहा कि सर्वोदय सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ और कुशल प्रशासन सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था का आधार विकेन्द्रीकरण सर्वोदय समस्त शक्ति जनता को प्राप्त होना, सर्वोदय अधिकारी वर्ग द्वारा अपने आपको जनता का स्वामी नही वरन् सेवक समझना।

संदर्भ सूची

1. एम.के गाँधी :– संपूर्ण गाँधी वाड्मय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार संपादक प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1984
2. एम.के गाँधी :– सर्वोदय मजदूर की किसान दोस्ती प्रगति प्रकाशन मास्को, 1976 पृ. 42
3. पराग चोलकर :– सर्वोदय, पवनार, विनोबा भावे विचार दोहन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. भंडारी चारू चंद्र :– सर्वोदय समाज भूदान यज्ञ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1955
5. अमिय चक्रवती :– विनोबा भावे एण्ड महात्मा गाँधी दि मॉडर्न बर्ल्ड, सर्वोदय समीक्षा, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजधाट वाराणसी, 2006 प`. 302
6. गंगााधर दास :– विनोबा भावे जी यादे में भूदान आंदोलन सुधारक, विकास प्रकाशन नई दिल्ली, 1948 प`. 101
7. दिनंमान :– किसान एवं मजदूर आंदोलन वाती, टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972
8. रंगनाथ दिवाकर :– भूदान आंदोलन एवं सत्याग्रह विश्व शान्ति पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस न्यू दिल्ली, 1984
9. पूनम गर्ग :– महात्मा गाँधी की विचार धारा का प्रभाव, हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी, निदेशालय, नई दिल्ली, 1986 पृ. 182